

“किसानों का मत करो अपमान, यहीं हैं देश की शान”



पंत प्रसार संदेश



वर्ष : 19, अंक : 4

(अक्टूबर-दिसम्बर, 2024)

कुलपति संदेश

भारतीय कृषि अनेक दशकों से हमारी अर्थव्यवस्था का आधार रही है तथा यह वर्तमान में लगभग 140 करोड़ जनसंख्या को खाद्यान्न उपलब्ध करा रही है। बदलते मौसम, पर्यावरण असंतुलन, दैवीय आपदा इत्यादि कारणों से वैज्ञानिकों के समक्ष कृषकों की आजीविका में सुधार लाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। हरित क्रांति की जननी पंत विश्वविद्यालय कृषकों की आय वृद्धि हेतु नवीनतम तकनीकियाँ यथा उन्नत प्रजातियाँ, जैविक खेती, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन, मौन पालन, स्थानीय उत्पादों का मूल्यवर्धन आदि का विकास कर कृषकों को उपलब्ध कराया जा रहा है। कृषकोपयोगी तकनीक दूरस्थ क्षेत्र के कृषकों तक पहुंचायी जा रही है। कृषि के उत्तरोत्तर विकास हेतु विश्वविद्यालय द्वारा 350 से भी अधिक प्रजातियों का विकास किया गया है, जिसमें धान्य फसलें, दलहन, तिलहन, मसाले, सब्जियाँ, औद्योगिकी इत्यादि हैं। पशुपालन के क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय निरन्तर नये-नये ऊँचाइयों को छू रहा है।




यहाँ यह कहना उचित होगा कि विकसित तकनीकों की तभी सार्थकता है जब कृषक इन्हें सफलतापूर्वक अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकें। तकनीक हस्तान्तरण का कार्य मुख्यतः कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के कंधों पर है जो निरन्तर सेवा-भाव के साथ अपनी भूमिका निभा रहे हैं। कृषकों के बीच निःस्वार्थ भाव और लगन से सेवा करने का ही परिणाम है कि कृषकगण, कृषि वैज्ञानिकों पर पूरा भरोसा रखते हैं। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका “पंत प्रसार संदेश” में आगामी त्रैमास के प्रमुख कृषि कार्यों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा चलाये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों, प्रशिक्षणों, प्रदर्शनों, सफलता की कहानियाँ इत्यादि को वर्तमान अंक में समाहित किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों, प्रसार कार्यकर्ताओं आदि के लिए उपयोगी साबित होगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा तथा डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय को बधाई देता हूँ।


(मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

हर्ष का विषय है कि निरन्तर बढ़ती जनसंख्या हेतु देश के पास पर्याप्त खाद्यान्न की उपलब्धता है, जिसके लिए निश्चित रूप से कृषि वैज्ञानिक, विभागीय अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषक बधाई के पात्र हैं। आज के परिपेक्ष्य में खाद्य सुरक्षा, सुपोषण, पर्यावरण स्थिरता व लाभान्वित कृषि आजीविका को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वैज्ञानिकों द्वारा विकसित तकनीक को अपना कर किसान अपनी आय में पर्याप्त वृद्धि कर सकते हैं। विकसित तकनीक के क्षेत्रीय हस्तांतरण में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों का बहुत बड़ा योगदान होता है। ये वैज्ञानिक, कृषि विश्वविद्यालय अथवा अन्य शोध केन्द्रों द्वारा विकसित तकनीक को क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप कृषकों तक ले जाकर तकनीक का प्रचार-प्रसार करते हुए कृषकों की आजीविका सुधारने हेतु सतत प्रयत्नशील रहते हैं। भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा वर्तमान परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए अनेक उन्नत प्रजातियों का विकास किया गया है। विशेषकर बेबीकॉर्न एवं स्वीटकॉर्न के उन्नत बीजों व संस्तुत कृषिकरण का प्रयोग कर किसान अपनी आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। सरकार द्वारा दिये जा रहे अनुदान का लाभ भी किसान भाई ले रहे होंगे ऐसा मुझे विश्वास है। अनेक कृषक स्वयं सहायता समूह, कृषक क्लब, कृषक मण्डल, एफ.पी.ओ. आदि द्वारा संगठित होकर कृषिकरण करते हुए अपने आजीविका में सुधार कर रहे हैं। उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों में कार्यरत वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों को मैं बधाई देता हूँ कि वे अपने घर परिवार से दूर रहते हुए कृषकों की सेवा व उनके आर्थिक सुधार हेतु तत्पर रहते हैं। मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि पंत विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका “पंत प्रसार संदेश” का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि यह पत्रिका हित धारकों हेतु बहुत लाभकारी होगी।





(डा० हनुमान सहाय जाट)

निदेशक, भा.कृ.अ.प.-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा त्रैमासिक पत्रिका “पंत प्रसार संदेश” का प्रकाशन किया जा रहा है। भारतीय कृषकों का अतीत से ही खेती-किसानी के प्रति अटूट सम्बन्ध रहा है। किसान अपने परिवार का भरण-पोषण अनाज फसलें, सब्जियाँ एवं फलों के उत्पादन तथा पशुपालन आदि से करते हैं। इसके साथ ही अतिरिक्त कृषि उत्पादों का बाजार में विक्रय करके अपनी समस्त आर्थिक, सामाजिक आवश्यकताओं के साथ-साथ कृषि निवेशों का क्रय करते हैं। वैज्ञानिकों ने देश व किसान हित में कृषि की विभिन्न तकनीकों को विकसित करके उत्पादन (प्रति इकाई क्षेत्रफल) में महत्वपूर्ण वृद्धि की है, जो अनुकरणीय है। कृषि विश्वविद्यालय एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा जलवायु परिवर्तन के अनुरूप नई प्रजातियाँ विकसित करना, सीमित जल से बेहतर फसल प्रबन्धन के साथ-साथ जैव-उर्वरक एवं जैव-रसायन के प्रयोग आदि पर निरन्तर शोध किये जा रहे हैं। इस सन्दर्भ में यह लिखना भी उपयुक्त होगा कि हमारे संस्थान द्वारा विकसित की जा रही गेहूँ एवं जौ की अनेक प्रजातियों का किसान अंगीकरण करके उत्पादन के नित नए आयाम स्थापित कर रहे हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि उच्च गुणवत्तायुक्त, रोग प्रतिरोधी किस्मों के बीजों की प्राप्ति हेतु संस्थान से सम्पर्क कर सकते हैं।



गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अपने अनूठे समन्वित स्वरूप शिक्षा, शोध एवं प्रसार के लिए विख्यात है। मुझे यह ज्ञात हुआ है कि इस विश्वविद्यालय के अधीन विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक कृषकों को आधुनिक कृषि विधाओं से अवगत करा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप कृषक प्रति इकाई क्षेत्रफल से अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ राष्ट्र की सकल घरेलू उत्पाद में अभिवृद्धि कर नये-नये आयाम स्थापित कर रहे हैं। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं विश्वविद्यालय को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित सामग्री के अध्ययन से सभी पाठकों को लाभ मिलेगा।


(डा० रतन तिवारी)

निदेशक, भा.कृ.अ.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : जनवरी-मार्च

जनवरी : मैदानी क्षेत्र-फसल

गेहूँ : देर से बोयी गयी फसल में बुवाई के लगभग 25-30 दिन के अन्दर निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। संस्तुत खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग करें। फसल में जिक की कमी अथवा पीला रतुआ के लक्षण दिखाई देने पर संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।

तोरिया (लाही), पीली सरसों एवं राई : विलम्ब से बोयी गयी तोरिया एवं पीली सरसों की फसल पकने पर कटाई करें। राई में फूल व फलियां बनते समय सिंचाई करें। फसल में बालदार सूँड़ी व माहू कीट तथा झुलसा, सफेद गेरुई एवं तुलासिता रोग आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।

चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। चना अथवा मसूर में माहू कीट लगने पर रोकथाम हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

गन्ना : पेड़ी एवं शरदकालीन गन्ने की कटाई करें। शरदकालीन गन्ने में निकले जल कल्लों (वाटर-शूट्स) को काट दें।

जनवरी : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

गेहूँ : खरपतवारों को निकाल लें। खरपतवार नियंत्रण हेतु संस्तुत खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग करें। वर्षा होने पर असिंचित गेहूँ में 1.2 कि.ग्रा. तथा सिंचित गेहूँ में सिंचाई के पश्चात् 2.0-2.5 कि.ग्रा. प्रति नाली की दर से यूरिया की टॉप-ड्रेसिंग करें।

मसूर एवं मटर : निराई-गुड़ाई कर फसल में उगे खरपतवारों को निकाल लें। पौध विगलन रोग आने पर संस्तुति अनुसार फफूँदनाशी रसायन का छिड़काव करें।

तोरिया (लाही/घरिया), पीली सरसों एवं राई : इन फसलों में कीट अथवा रोगों का प्रकोप होने पर संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।

जनवरी : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

आलू : आलू की खुदाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसल की पत्तियों की कटाई का कार्य 15 जनवरी से पहले कर दें। पछेता झुलसा बीमारी के बचाव के लिए इन्डोफिल-45 का 0.2 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर : फसल की आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

मटर : बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें। सफेद चूर्णिल आसिता बीमारी से बचाव के लिए गंधक 03 कि.ग्रा. या ट्राईकोडर्मा का 02-03 छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करें।

फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी : तैयार फूल की कटाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें।

मूली, गाजर, शलजम : तैयार जड़ों की खुदाई, सफाई कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल के लिए उत्तम जड़े उखाड़ें व 1/3 भाग काटकर 60x50 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

प्याज : तैयार क्यारियों में 20x10 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें। रोपाई सांयकाल करें एवं रोपाई के बाद हल्की सिंचाई करें।

जनवरी : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : घाटियों में आलू की बुवाई की व्यवस्था करें।

टमाटर : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजें। ग्रीष्मकालीन रोपाई के लिए पौध तैयार करें।

पालक, मैथी : इन फसलों की कटाई करें व गड्डियां बनाकर बाजार भेजें। अवांछित पौधों को निकालें तथा आवश्यकतानुसार निराई व सिंचाई करें।

जनवरी : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए छप्पर का प्रबन्ध करें। बाग व थालों की सफाई करने के बाद, थालों में गोबर की खाद व

फास्फोरसधारी उर्वरकों का प्रयोग करें।

नीबूवर्गीय फल : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग में गोबर की खाद व फास्फोरसधारी उर्वरक का प्रयोग करें। जनवरी माह में नीबू की कटाई-छंटाई करें।

अमरुद : फलों की चिड़ियों से रक्षा करें। पके फलों की तुड़ाई करके बाजार भेजें।

पपीता : बाग की सिंचाई करें। पेड़ पर फलों को टाट से ढक दें। फास्फोरस व पोटाशधारी उर्वरकों को प्रयोग कर गुड़ाई करें।

लीची : छोटे पौधों का पाले से बचाव करें। फलदार पौधों में गोबर की खाद व फास्फोरसधारी उर्वरकों को थाले में प्रयोग करके मिट्टी में मिला दें।

कटहल : फलदार वृक्षों में गोबर की खाद तथा फास्फोरसधारी उर्वरक का प्रयोग करें। छोटे पौधों का पाले से बचाव करें।

जनवरी : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब व नाशपाती : नए बाग लगाने हेतु खोदे गए गड्ढों की भराई माह के प्रथम सप्ताह तक पूरा कर लें। पौध रोपण के बाद उनकी सधाई हेतु कटाई-छंटाई करें। कटे भाग पर चौबटिया लेप लगा दें।

आड़ू, खुबानी, आलू बुखारा व बादाम : नए बाग लगाने हेतु गड्ढों की भराई का कार्य पूर्ण कर लें। बाग में गोबर की खाद व फास्फोरस उर्वरक का प्रयोग करें। बाग के पेड़ों की काट-छांट प्रारम्भ कर दें। तराई, भाबर व मैदानी क्षेत्रों में आड़ू व आलूबुखारा की कम ठंड चाहने वाली किस्मों की रोपाई का कार्य पूर्ण करें।

फरवरी : मैदानी क्षेत्र-फसल

गेहूँ एवं जौ : समय पर बोयी गयी फसल में पुष्पावस्था में सिंचाई करें। विलम्ब से बोयी गयी फसल में खरपतवार नियंत्रण करें। फसल में झुलसा व गेरुई रोग एवं माहू कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

राई : फसल में दाना बनने की अवस्था पर सिंचाई करें। सफेद गेरुई, झुलसा अथवा तुलासिता रोग आने पर संस्तुति के अनुसार फफूँदनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों में फूल आने से पूर्व आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। चने में फली छेदक कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

फरवरी : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

गेहूँ एवं जौ : सिंचित दशा में बोयी गयी गेहूँ की फसल में वर्षा न होने पर पुष्पन अवस्था पर सिंचाई करें। उपराऊँ/असिंचित फसल में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णय छिड़काव लाभदायक रहेगा।

तोरिया, पीली सरसों एवं राई : तिलहनों में माहू कीट अथवा रोगों का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार नियंत्रण करें।

मसूर एवं मटर : फलियों में दाना बनते समय पानी की उपलब्धतानुसार सिंचाई करें। मसूर में माहू कीट एवं मटर में फली छेदक व पत्ती सुरंगक कीट का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

फरवरी : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

आलू : पिछेती फसल में 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल-45 नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर : ग्रीष्मकालीन फसल की रोपाई यदि अभी तक नहीं कर पायें हैं तो शीघ्र ही 60x45 सेमी. की दूरी पर करें। आखिरी जुताई पर 100 कि. ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 80 कि.ग्रा. पोटाश/है. की दर से डालें।

बैंगन : रोपाई हेतु भूमि की तैयारी के समय 200-300 कुन्तल सड़ी हुई गोबर की खाद, 10 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 80 कि. ग्रा. पोटाश/है. की दर से दें। रोपाई 60x45 सेमी. की दूरी पर करें।

मटर : कीट एवं रोगग्रस्त फलियों को बाजार भेजने से पूर्व छांट दें। बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें तथा चूर्णी फफूँदी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

प्याज, लहसुन : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई, निराई व गुड़ाई करें व 50 कि.ग्रा. यूरिया की खड़ी मात्रा फसल में डालें। यदि अभी तक रोपाई नहीं की है तो अविजल खेत की तैयारी करें व 20x10 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

फरवरी : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : आलू की अगेती बुवाई हेतु खेत की तैयारी के समय उर्वरक 150 : 100 : 100 की दर से डालें। बीज हेतु बड़ा आलू काटें एवं कटा टुकड़ा 30-50 ग्राम का तथा दो या तीन आंखों वाला होना चाहिए। आलू की बुवाई 45-60 सेमी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में व 5-7 सेमी. गहरी की जाये।

टमाटर : घाटियों में टमाटर की बुवाई 15-20 सेमी. ऊंची उठी हुई क्यारियों में 10-15 सेमी. पर बनी पंक्तियों में करें। तापक्रम बहुत कम होने की दशा में 15-20 सेमी. मोटी सूखी घास व पत्तों की अवरोध पर्त से पौधालय को ढक दें।

शिमला मिर्च : घाटियों में तैयार पौधालय में 1-1.5 कि.ग्रा. बीज/हे. की दर से इसकी बुवाई करें।

खीरावर्गीय : खीरावर्गीय सब्जियों की बुवाई हेतु 1.5x1.0 मीटर की दूरी पर थाले बनायें। प्रत्येक थाले में 10-15 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 20-25 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 15 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश मिला दें व 05-06 बीज प्रति थाला बोयें।

फरवरी : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : चूर्णित आसिता, श्यामवर्ण और छोटी पत्ती रोग के लिए संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। इसी तरह भुनगा कीट की रोकथाम हेतु भी संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

केला : पौधों की सूखी पत्तियों को निकाल कर बाग की 15 दिन के अन्तर पर दो सिंचाई करें। इस माह के अंत तक पोटाश व नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें।

नीबूवर्गीय फल : मूलवृत्त तैयार करने हेतु पौधशाला में बीजों की बुवाई करें। पौधशाला में कली बाँधें। फलदार बागों में पोटाश व नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें।

पपीता : पिछले सीजन में लगाए गए पौधों में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई व एक सिंचाई करें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

लीची : फलदार वृक्षों में पोटाश और नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके थालों में गुड़ाई कर दें। टहनियों पर छाल खाने वाली इल्ली के मल को साफ कर दें।

फरवरी : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब व नाशपाती : ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र में नए बाग रोपाई का कार्य इस माह के मध्य तक कर दें। पौधों की सधाई का कार्य पूर्ण करें। पोटाश व नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके थालों की गुड़ाई करें व पलवार से ढक दें।

आड़ू व बादाम : पर्णकुंचन की रोकथाम के लिए चूना गंधक (1:15) के घोल का छिड़काव करें।

अखरोट व अन्य : पिछले माह यदि उर्वरकों का प्रयोग न किया गया हो तो इस माह कर दें। थालों में पलवार बिछा दें।

मार्च : मैदानी क्षेत्र-फसल

गेहूँ : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। कंडुवा रोग से ग्रसित गेहूँ की बालियों को सावधानीपूर्वक लिफाफे से ढककर निकाल लें तथा मिट्टी में दबाकर नष्ट कर दें। माहू के नियंत्रण हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

राई : तैयार फसल की कटाई व मड़ाई कर लें तथा दानों को सुखाकर भण्डारित कर लें।

चना, मटर, मसूर, उर्द एवं मूंग : चना, मटर एवं मसूर में फली बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। चना में फली छेदक कीट की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का प्रयोग करें। उर्द की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में तथा मूंग की द्वितीय पखवाड़े में कर लें।

गन्ना : नौलख गन्ने की कटाई माह के अन्त तक कर लें। फरवरी माह में बोयी गयी फसल में सिंचाई करें तथा 3-4 दिन बाद गुड़ाई कर खरपतवार भी निकाल लें। बसन्तकालीन गन्ने की बुवाई माह के मध्य तक पूरी कर लें। गन्ने की दो पंक्तियों के बीच में अन्तःफसल के रूप में उर्द, मूंग अथवा लोबिया की एक लाईन की बुवाई की जा सकती है। शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा संस्तुति अनुसार यूरिया की टॉप-ड्रेसिंग करें।

मार्च : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

गेहूँ एवं जौ : फसल की पुष्पन अवस्था पर सिंचाई करें। असिंचित फसल में पुष्पन अवस्था से पूर्व यूरिया के 2 प्रतिशत घोल (20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी) का पर्णीय छिड़काव करना लाभप्रद रहेगा। फसल में झुलसा अथवा गेरुई रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

तोरिया, पीली सरसों एवं राई : फसल पकने पर कटाई कर लें। मध्यम ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में बोयी गयी राई की फसल में रोग अथवा कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

मटर एवं मसूर : फली छेदक, पत्ती सुरंगक अथवा माहू कीट की रोकथाम हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

धान : माह के द्वितीय पखवाड़े में चेतकी धान (असिंचित) की बुवाई शुरू करें। अधिक उत्पादन हेतु प्रजाति का चयन, बीज की मात्रा, बीज शोधन, बुवाई की विधि एवं उर्वरकों का प्रयोग संस्तुति के अनुसार करें।

मार्च : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

आलू : आलू की खुदाई का काम 15 मार्च तक अवश्य पूरा करें। देर से खुदाई करने पर आलू सड़ना शुरू हो जाता है। हरे, छोटे व कटे आलू को निकालकर शेष कोया तो बाजार भेजें या शीत भण्डार में रखने की व्यवस्था करें।

टमाटर : जनवरी-फरवरी की फसल में 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल-45 का छिड़काव करें। ग्रीष्मकालीन टमाटर में फलछेदक कीट का काफी आक्रमण होता है। अतः इसके बचाव के लिए पुष्पावस्था में संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

बैंगन : पूर्व में रोपी गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें एवं 50 कि.ग्रा. यूरिया/हे. की दर से खड़ी फसल में डालें। यदि अभी तक रोपाई नहीं की है तो 60-45 सेमी. की दूरी पर रोपाई व सिंचाई करें।

फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी, मूली, गाजर व शलजम : तैयार गोभी व जड़ों को बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसलों में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें।

प्याज व लहसुन : फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। 50 कि.ग्रा. यूरिया खड़ी फसल में डालें। बीमारी के बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल-45 का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

मिर्च : पूर्व में रोपी गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। यूरिया 50 कि.ग्रा./हे. की दर से खड़ी फसल में डालें। यदि अभी तक रोपाई नहीं की गई है तो 50x50 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

मार्च : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : घाटियों में झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल-45 का घोल बनाकर छिड़काव करें, सिंचाई करें व 50 कि. ग्रा. यूरिया/हे. की दर से खड़ी फसल में डालें। खेत की तैयारी के समय 200 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद डाले तथा उपलब्धतानुसार आखिरी जुताई पर रासायनिक उर्वरक का भी प्रयोग करें तथा 60 सेमी. की दूरी पर मेड़ बनाकर इन पर 15 सेमी. की दूरी पर बीज बोयें।

टमाटर : पूर्व में रोपी गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी के बचाव के लिए 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल-45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

पालक/धनियां, मैथी : बुवाई पूर्व तैयार खेत में 100 कुन्तल गोबर की

सड़ी खाद तथा 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 60 कि. ग्रा. पोटाश/है. की दर से डाले, 30 सेमी. की दूरी पर कतारें बनायें व इनमें बीज की बुवाई करें।

भिण्डी / लोबिया : बुवाई पूर्व 100 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद, 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश/है. की दर से डाले। 30 सेमी. की दूरी पर कतारें बनायें व बीज की बुवाई करें।

खीरावर्गीय फलियां : बुवाई हेतु 150 सेमी. की दूरी पर नालियां बनायें। उनमें 100 सेमी. की दूरी पर थालें बनायें। प्रत्येक थाले में 10 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 10 ग्राम यूरिया, 25 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 10 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश डालकर बीज की बुवाई करें।

मार्च : मैदानी क्षेत्र-फल

केला : खरपतवार को निकालकर गुड़ाई करें। अवांछित पुत्तियों को निकाल दें। माहू की रोकथाम हेतु 0.2 प्रतिशत मैटासिस्टाक्स के घोल का छिड़काव करें। बाग की सिंचाई करें।

नीबूवर्गीय फल : कैंकर रोग की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स-50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पौधशाला में मूलवृत्त तैयार करने हेतु बीजों की बुवाई करें। पिछले मौसम में कलिका चढ़ाए गए पौधों के मूलवृत्त से उगे हुए कल्लों को निकाल दें।

पपीता : नए बाग की रोपाई करें। बाग में थालों की सफाई करें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।

कटहल, फालसा व करौंदा : बाग की सफाई करें। यदि नमी की कमी हो तो एक सिंचाई करें। बाग में ब्लाइटाक्स-50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

मार्च : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब व नाशपाती : बीजू मूलवृत्त पर भेंट कलम बांधने का कार्य समाप्त करें। बाग में पलवार बिछाएं। नाशपाती में नाइट्रोजन व पोटाशधारी उर्वरकों का प्रयोग करें। चूर्णिल आसिता की रोकथाम हेतु सल्फेक्स (0.2 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा व बादाम : जिक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) व बोरेक्स (0.2 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें। गोंदार्ति रोग की रोकथाम हेतु 0.2 प्रतिशत ब्लाइटाक्स-50 के घोल का छिड़काव करें।

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

विश्वविद्यालय द्वारा 116वाँ अखिल भारतीय किसान मेला का आयोजन अक्टूबर 04-07, 2024 को किया गया। उद्घाटन अवसर पर

मा. मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि विकसित कृषि तकनीक के हस्तांतरण द्वारा समाज के अंतिम पायदान पर बैठे कृषकों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। आपने यह भी कहा कि पंत विश्वविद्यालय अपने शोध एवं प्रसार से अनेक



किसान मेले का उद्घाटन करते मा0 मुख्यमंत्री

उन्नतशील बीज एवं कृषि तकनीक का विकास किया, जिससे देश खाद्यान्न उत्पादन में निरन्तर अग्रणी भूमिका निभा रहा है। कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि कृषक छोटे-छोटे कृषि उद्यमों को अपनाकर अपनी आजीविका में कई गुना बढ़ोतरी कर सकते हैं। आपने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे नित नवीनतम शोध करें और शोधों का परिणाम कृषकों तक पहुंचे, यह भी अति महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि ने उन्नत खेती करने के साथ-साथ कृषकों को इन विधाओं से जोड़ने के उपलक्ष में राज्य के नौ प्रगतिशील कृषकों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा नवीनतम प्रजातियों के बीज, शाक-भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया गया। मेले के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि,

महामहिम राज्यपाल, उत्तराखण्ड, लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह जी, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (से.नि.) ने कहा कि पंतनगर के वैज्ञानिकों पर बढ़ती जनसंख्या हेतु खाद्यान्न उत्पादन तथा उन्नत तकनीक द्वारा किसानों की आय वृद्धि करने की बड़ी चुनौती है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय यह चुनौती स्वीकार करते हुए आवश्यक कदम उठायेगा।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

• अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत विभिन्न रबी फसल एवं सब्जियों के 41.30 है. क्षेत्रफल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं अनुकरणीय प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है। कृषक प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 16 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन हेतु कृषि निवेशों का वितरण प्रशिक्षण आयोजित कर 390 प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित किया गया।



• रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 12 किसान गोष्ठियों में वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिये गये, जिसमें 223 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। दिनांक 23.12.2024 को अंगीकृत ग्राम में किसान दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 55 कृषक पुरुष महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

• केन्द्र द्वारा स्वच्छता अभियान तथा स्वच्छता पखवाड़ा दिनांक 16-31.12.24 तक आयोजित किया गया, जिसमें केन्द्र परिसर, केन्द्र प्रक्षेत्र एवं विभिन्न गांवों व शैक्षिक संस्थानों में जाकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

• परीक्षणों के अन्तर्गत गेहूं व सब्जी मटर के प्रजातीय परीक्षण, जैव उर्वरकों का गेहूं व जौ में प्रयोग, सोयाबीन टोफू पनीर का ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच, सीडलिंग ट्रांसप्लान्टर के प्रयोग से महिलाओं के कार्यक्षमता में वृद्धि, पशुओं में स्वास्थ्य सुधार जैसे परीक्षण आयोजित किये गये हैं।



स्वच्छता अभियान का आयोजन

• अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत गेहूं प्रजाति (वी.एल. 967) 10 है. क्षेत्रफल, महिलाओं के कार्यक्षमता विकास हेतु त्रिशूल वीडर विषय पर 15 प्रदर्शन, पोषण वाटिका के 10 प्रदर्शन एवं पशुओं में परजीवी रोग प्रबन्धन विषय पर 45 प्रदर्शन आयोजित किये गये हैं।

• केन्द्र द्वारा 03 पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कर पशुपालकों की समस्याओं का समाधान किया गया। केन्द्र द्वारा दिनांक 18.12.2024 को कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन कर कृषकों की समस्याओं का समाधान किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

• ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत 11 परीक्षण संचालित किये गये। प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत मूसर उन्नत प्रजाति पी.एल. 8 एवं पी.एल. 9 के 4.0 हे0, सरसों की 22.00 हे0, प्याज की उन्नत प्रजाति NHRDF-Red.4 का 0.1 हे0 पशु पालन के 02, गृह विज्ञान के 01 प्रदर्शन लगाये गये।

• केन्द्र द्वारा कुल 13 प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 260 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। केन्द्र व सशस्त्र सीमा बल,

चम्पावत के सहयोग से तीन दिवसीय कृषि उत्पादन एवं बीज वितरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजित किया गया, जिसमें 27 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

- केन्द्र द्वारा 01 प्रक्षेत्र दिवस एवं 02 गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें गृह वाटिका प्रबन्धन, रबी फसलों का प्रबन्धन, बेमौसमी सब्जी पौध का उत्पादन एवं दुधारु पशुओं के टीकाकरण की जानकारी दी गयी। केन्द्र पर 3 कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन कर कृषकों को पोषण प्रबन्धन, सब्जी नर्सरी उत्पादन व पशु पालन प्रबन्धन की जानकारी दी गयी। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह के जन्मदिवस 23.12.2024 को किसान दिवस के रूप में तथा दिनांक 25.12.2024 को कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापना दिवस मनाया गया।
- दिनांक 16-31.12.2024 तक विभिन्न ग्रामों व केन्द्र पर स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। केन्द्र पर 19 स्कूलों के कुल 1136 छात्र-छात्राओं एवं 78 शिक्षकों द्वारा केन्द्र का शैक्षिक भ्रमण किया गया।



कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ 08 है., सरसों 40 है. एवं मसूर 02 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन आयोजित हुआ है। इसी क्रम में अदरक, ब्रोकली व स्ट्राबेरी के 1.60 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन आयोजित किये गये हैं।
- केन्द्र द्वारा 15 प्रशिक्षणों का आयोजन, 05 कृषि गोष्ठी, 01 प्राकृतिक खेती कार्यशाला व गृह विज्ञान विषयक सामूहिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। पौधशाला प्रबन्धन विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन 25 नवंबर से 9 दिसंबर, 2024 तक किया गया।
- लखनऊ में 17 अक्टूबर, 2024 को आयोजित कार्यक्रम में कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, देहरादून को "राज्य स्तरीय फार्म एवं खाद्य कृषि सम्मान" से सम्मानित किया गया।
- पी.एम. कुसुम योजना के अन्तर्गत दिनांक 30.11.2024 को जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। RAWE कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों के कृषि स्नातक 125 विद्यार्थियों को 21 दिन का प्रशिक्षण दिया गया।
- ब्रोकोली की 3000, पत्तागोभी की 6000 एवं फूल गोभी की 4500 पौध का विक्रय किया गया तथा प्याज पौध विक्रय गतिषील है। प्रक्षेत्र पर प्रदर्शित प्याज पौध, आम और लीची बाग में ड्रोन से छिड़काव किया गया। केन्द्र पर बकरी पालन इकाई एवं डेयरी इकाई की स्थापना की गई।
- खेती के लिए उपयोगी 12 कृषि समाचारों को स्थानीय अखबारों में प्रसारित कराया गया एवं आकाषवाणी देहरादून पर 02 भेंटवार्ता प्रस्तुत की गई, 01 लेख व 02 तकनीकी बुलेटिन प्रसारित किया गया।



ड्रोन से रसायन छिड़काव का प्रदर्शन

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- सस्य विज्ञान, मृदा विज्ञान, कृषि अभियंत्रण, पशुपालन, रोग नियंत्रण आदि पर कुल 11 ऑन फॉर्म ट्रायल व छः अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। केन्द्र द्वारा कुल 11 प्रशिक्षण तथा कृषि स्नातक विद्यार्थियों हेतु 25 दिवसीय प्रशिक्षण उन्नत कृषि यंत्रों पर परिचर्चा आयोजित किया गया। इस तिमाही में ग्रामीण युवाओं एवं रेखीय विभागों हेतु आठ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।
- केन्द्र द्वारा दो प्रदर्शनी, एक किसान मेला, सात रेडियो वार्ता, आठ प्रेस रिलीज एवं तीन कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत मसूर-1 हैक्टैयर तथा सरसों-40 हैक्टैयर क्षेत्रफल पर प्रदर्शन लगाए गए हैं। केन्द्र द्वारा किसानों को दूरभाष के माध्यम से 67 बार समस्याओं का समाधान तथा 71 समस्याओं को हेल्पलाइन के माध्यम से निराकरण किया गया। ड्रोन के पांच प्रदर्शन भी इस दौरान आयोजित किए गए। समन्वित रूप से स्वच्छता हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया तथा स्कूलों में किसानों के क्षेत्र पर तथा केन्द्र पर स्वच्छता हेतु कार्यक्रम आयोजित किए गए।



उन्नत कृषि यंत्रों पर परिचर्चा

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ (वी0एल0 907, एच0डी0 2967)- 05 हैक्टैयर, सरसों (लाही पी.टी. 508, पन्त 'वेता)- 40 है. में प्रदर्शन लगाये गये हैं। एकटो और एण्डो पैरासाइड्स के नियंत्रण का 20 कृषकों के 194 पशुओं पर परीक्षण, कुक्कुट पालन को अतिरिक्त आय का स्रोत बनाने के लिये चूजों का प्रदर्शन, पर्वतीय महिलाओं में उर्जा की बचत के लिये महिलाओं को लौंग हैण्डल स्प्रिंग ब्रेस यंत्र के प्रयोग का प्रदर्शन किया गया।
- परीक्षण के अन्तर्गत गेहूँ में ताप के प्रभाव के प्रबन्धन हेतु पोटैशियम नाइट्रेट (KNO₃) का फोलियर स्प्रे, गेहूँ में विभिन्न खरपतवार नाशियों का 6 है0 में परीक्षण, महिलाओं को पशुओं का गोबर उठाने एवं गौशाला की साफ सफाई हेतु प्लास्टिक निर्मित मूल्यवर्धित उत्पादों का प्रदर्शन डंग कलैक्टर यंत्र का परीक्षण, पशु विज्ञान विषय में बकरी की नई प्रजाति एवं गाय में प्रजनन क्षमता को बढ़ाये जाने हेतु आंकलन के लिये कृषकों को चयनित किया गया।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत कुल 27 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर 470 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया। स्कूल के बच्चों को मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। आर्या परियोजना के अन्तर्गत कुक्कुट पालन एवं शोभाकारी मोमबत्ती बनाने विषयक प्रशिक्षण दिया गया।
- विशेष पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजन के अन्तर्गत स्वच्छता पखवाड़ा (16-31 दिसम्बर 2025) कार्यक्रम जनपद के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों में आयोजित किये गये।



मूल्यवर्धित उत्पादों का प्रदर्शन

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा कुल 26 प्रशिक्षण आयोजित कर 563 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया। ग्रामीण युवाओं हेतु 04 रोजगारपरक प्रशिक्षण एवं वाहय प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 03 प्रशिक्षण आयोजित कर 86 प्रतिभागियों को लाभान्वित किया गया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ 10 है., सरसों 05 है., मसूर 03 है., बंद गोभी, प्याज, बरसीम, जई प्रत्येक 01 है., कीवी एवं आम 0.5 है., पोल्द्री 20 प्रदर्शन, बटन मशरूम 10 प्रदर्शन व पोषण वाटिका के अन्तर्गत सब्जी किट प्रदर्शित/उपलब्ध कराये गये।
- प्रक्षेत्र से कृषकों को उन्नत प्रजाति की सब्जियों की पौध जैसे प्याज, पत्तागोभी, ब्रोकली व फूलों में गेंदा, रोजमेरी, कीवी इत्यादि के पौधे स्थानीय निवासियों को विक्रय किये गये।
- पन्तनगर विश्वविद्यालय में आयोजित किसान मेला व उद्योग प्रदर्शनी दिनांक 04-07 अक्टूबर, 2024 में जिले से श्री केशव दत्त मखौलिया, ग्राम-धनौड़ा विकास खण्ड-विण, जनपद-पिथौरागढ़ को प्रगतिशील कृषक के रूप में सम्मानित किया गया।
- गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के मा0 कुलपति डॉ0 मनमोहन सिंह चौहान एवं निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ0 जितेन्द्र क्वात्रा द्वारा दिनांक 24.10.2024 को भ्रमण कर मधुमक्खी पालन यूनिट, समन्वित कीट-रोग प्रबन्धन इकाई, कुक्कुट पालन इकाई, प्राकृतिक केन्द्र पर कुलपति जी का भ्रमण खेती इकाई, स्वचालित मौसम इकाई, मछली एवं सिचाई टैंक, पॉलीहाउस आदि का अवलोकन एवं आवश्यक सलाह दिया गया।
- दिनांक 07 दिसम्बर 2024 को कृषि चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके प्रथम एपिसोड की लाइव स्क्रीनिंग माननीय केंद्रीय कृषि और कल्याण मंत्री द्वारा हाल ही में जारी रबी के लिए उपयुक्त विभिन्न फसलों की 109 नई किस्मों में से 54 पर चर्चा पर केंद्रित था।



केन्द्र पर कुलपति जी का भ्रमण

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग)

- केन्द्र द्वारा कुल 14 प्रशिक्षण, 03 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तथा 01 अनुकरणीय परीक्षण सम्पादित हुए हैं। जनपद स्तरीय कृषक प्रशिक्षण में रबी फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, मशरूम उत्पादन, पशुपालन दुग्ध उत्पादन, फल संरक्षण तथा बेकरी उत्पाद विषयों पर कृषकों को छः जनपद स्तरीय कृषक प्रशिक्षण/गोष्ठी का आयोजन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। पौड़ी एवं उत्तरकाशी जनपद के कृषक उत्पादक समूह से जुड़े कृषकों को मशरूम उत्पादन, फसलों में कीट तथा रोग प्रबन्धन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, भण्डारण एवं विपणन पर प्रशिक्षण दिया गया।
- केन्द्र द्वारा प्रशिक्षित जनपद की प्रगतिशील कृषक श्रीमती सुनीता देवी, ग्राम-जामू को पन्तनगर विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 04-07 अक्टूबर, 2024 में आयोजित अखिल भारतीय कृषक मेले में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया।
- प्रक्षेत्र के पॉलीहाउस में पत्तागोभी-वरुण, फूलगोभी-न्यूजी



जनपद स्तरीय कृषक प्रशिक्षण/गोष्ठी का आयोजन

सुनोवाइट, मेघा, गिरिजा, प्याज-वी.एल.प्याज 3 व एन.एच.आर.डी. एफ रेड, लहसुन-एग्रोफाउण्ड पार्वती, राई-भरसार केदार राई तथा वी.एल. राई, मूली-स्कारलेट ग्लोब, गेहूँ वी.एल. 953, यू.पी.2903, यू.पी. 2855, यू.पी. 2865, मसूर पी.एल. 8, पी.एल. 9 प्रजातियों को प्रदर्शन के अन्तर्गत लगाया गया है।

- केन्द्र में मशरूम प्रदर्शन इकाई में ढिंगरी मशरूम, शैक्षणिक मधुमक्खी पालन इकाई में प्रजाति ऐपिस सिराना इण्डिका का पालन किया जा रहा है। मूल्य संवर्धन के अन्तर्गत मिर्च एवं मशरूम का अचार, मंडुवे तथा चौलाई के बिस्कुट एवं केक बनाने का प्रशिक्षण ग्रामीण महिला कृषकों को दिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत स्वस्थ तालाब पर्यावरण को बनाए रखने के लिए जलीय कृषि प्रोबायोटिक पूरक का मूल्यांकन, फीड प्रोबायोटिक का प्रभाव मछली की वृद्धि और उत्तरजीविता, महिलाओं (15-45 वर्ष) की पोषण स्थिति में सुधार के लिए पोषक तत्वों से भरपूर मिश्रण का आकलन, आलू में अगेती और पछेती झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए फसल वृद्धि के विभिन्न चरणों में विभिन्न कवकनाशी का मूल्यांकन, आय में वृद्धि और कीट नियंत्रण के लिए प्याज/टमाटर की फसलों में गेंदा की अंतरफसल खेती, मछली की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए उच्च गुणवत्ता वाला मछली आहार जैसे परीक्षण संचालित हो रहे हैं।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत फूलगोभी संकर गिरजा, प्याज एग्रीफाउण्ड लाइट रेड का प्रदर्शन, मछली की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक उत्पादकता में वृद्धि, लीवर के माध्यम से मछली फीड रूपांतरण अनुपात बढ़ाने, विटामिन के माध्यम से मांसपेशियों के विकास में सुधार अनुपूरकों, ऑक्सीजन की कमी के कारण उच्च मृत्यु दर की समस्या, कृषक महिलाओं के कठिन परिश्रम को कम करने के लिए लंबे हैंडल वाले स्प्रिंग ब्रेक का प्रदर्शन, पोषण वाटिका, बटन मशरूम, बकरी के रहन-सहन में सुधार के लिए उपयुक्त कीटाणुनाशक का प्रयोग जैसे प्रदर्शन संचालित हुए हैं।
- कृषक/कृषक महिलाओं हेतु कुल 30 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर 645 प्रतिभागियों को लाभान्वित किया गया।
- प्रक्षेत्र की गतिविधियों के अन्तर्गत गेहूँ में फसल प्रबंधन, बगीचे का प्रबंधन, प्याज की पौध उत्पादन, पॉली हाउस में पौध उत्पादन कार्यक्रम सम्पादित हुए हैं।
- डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, रेखीय विभाग के अधिकारी एवं अन्य गणमान्य अथितियों द्वारा दिनांक 26.10.2024 को तिलहन उत्पादन जागरूकता कार्यक्रम में भ्रमण तिलहन उत्पादन जागरूकता कार्यक्रम एवं दिनांक 17.12.2024 को नाबार्ड अधिकारी द्वारा भ्रमण किया गया।



तिलहन उत्पादन जागरूकता कार्यक्रम

सामुदायिक विज्ञान विद्यालय की गतिविधियाँ

- इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल डेवलपमेंट किच्छा एवं टाटा ग्रुप के सहयोग से कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम दिनांक 19 दिसंबर 2024 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती आभा गरखाल नियंत्रक एवं डॉ0 अल्का गोयल अधिष्ठात्री सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, विशिष्ट अतिथि डॉ0 ए.एस. नैन, निदेशक शोध द्वारा

महिलाओं के कौशल विकास, उद्यमिता एवं जागरूकता विषयों पर विस्तार से चर्चा की गयी।

- नैनीताल की महिलाओं हेतु विभिन्न प्राकृतिक सत्रों जैसे रुबिया कॉर्डिफोलिया की जड़ और वनस्पति रंग (टाइगर येलो) का प्रयोग करके बाँधनी तकनीक द्वारा रेशम कपड़े की रंगाई, मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण तथा स्थानीय कृषि, टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने और क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण मौसमी सब्जियों लौकी, टमाटर, मिर्च, मूली, गाजर, मेथी, धनिया, पालक आदि के बीज वितरित किए गए।
- दिनांक 27.12.2024 को खटीमा के हल्दी गांव में लिंग संवेदीकरण, जागरूकता और रोकथाम पर विचार विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया।



मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल पांच प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

प्रशिक्षण के मुख्य विषय बाजार आधारित प्रसार, ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग, मौन पालन: स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम, उन्नत मत्स्य पालन तकनीक एवं उन्नत बकरी पालन सम्बन्धी



मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का आयोजन

प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इसके अलावा छत्तीसगढ़ की महिला कृषकों हेतु जैविक खेती विषयक प्रशिक्षण का भी आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में मधुमक्खी पालक, प्रगतिशील मत्स्य पालक, कृषि/उद्यान/ आतमा/सहकारी विभाग के अधिकारी प्रसार कार्यकर्ता एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 129 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा अक्टूबर-दिसम्बर, 2024 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	जनवरी 15-18, 2025
2.	डिजिटल कृषि	फरवरी 6-8, 2025
3.	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 03-05, 2025

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 16 प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 850 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण के विषय पशुपालन प्रबन्धन, श्री अन्न की खेती, संरक्षित खेती, कृषि विविधीकरण एवं मधुमक्खी पालन इत्यादि से सम्बन्धित थे।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा संचालित गतिविधियाँ

भ्रमण पर आये 200 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं

फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 1,74,866.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के 345 कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 1,12,893.00 मूल्य के गेहूँ के बीज, सब्जियों- लोबिया, धनिया, भिण्डी, बैंगन, पालक, मेथी, लौकी, टमाटर, मूली एवं तोरई आदि के 17.70 कुन्तल बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाइन/कॉल सेन्टर 05944-234810 एवं 05944-235580 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 141 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

समन्वित कृषि प्रणाली इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर फूलगोभी, बंदगोभी, ब्रोकली, टमाटर, धनिया, मेथी, पालक इत्यादि के प्रदर्शन आयोजित किये जा रहे हैं। इस इकाई से परिसर एवं स्थानीय निवासियों को ताजी व रसायन मुक्त सब्जियों की उपलब्धतानुसार आवश्यकता की पूर्ति होती है। आगन्तुकों एवं प्रशिक्षण दौरान आये हुए कृषकों को यह इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है।

सफलता की कहानी :

तकनीक और परिश्रम का मीठा फल

श्री सुन्दर सिंह अन्ना, ग्राम-डुण्डु, कनालीछीना, पिथौरागढ़ के निवासी है। श्री

अन्ना बचपन से ही कृषि से और तत्काल जुड़ाव से वर्ष 2018 में सेना से अवकाश प्राप्ति के बाद आप गांव वापस आये और कृषि को रोजगार बनाने की प्रतिबद्धता पर कार्य प्रारम्भ किये। आपने समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा



कुक्कुट पालन, मौन पालन, संरक्षित कृषि, जैविक खेती, मत्स्य पालन इत्यादि में भाग लेकर क्षमता विकास किया। सब्जी उत्पादन में आपने परम्परागत विधि से बनाये जैविक तरल उर्वरक और जैविक रसायन-दशपर्णी का प्रयोग करते हुए स्थानीय बाजार में गुणवत्तायुक्त सब्जी का विक्रय किया। थोड़ा धन प्राप्ति के पश्चात् आपने मौन पालन और दो तालाब से मत्स्य पालन प्रारम्भ किये। वर्तमान में आपके पास मौन पालन के 10 बॉक्स और तालाब में लगभग 2500 मत्स्य बीज है। आपकी सोच है कि बन्दर और सुअर को जब जंगल में ही भोजन मिले तो वे मानव बस्ती की ओर क्यों आयेंगे। इस सकारात्मक उद्देश्य के साथ आपने ग्रामीण युवाओं के साथ गत वर्ष स्थानीय जंगल में आम और अमरुद के लगभग 250 पौधे तथा च्यूर के 100 पौधे रोपित किये। आप गन्ने से लघु स्तर पर रसायन मुक्त गन्ने का जूस एवं पोषण से भरपूर गुड़ भी स्थानीय बाजार में विक्रय करते हैं। देहरादून में आयोजित मिलेट दिवस कार्यक्रम दिनांक 27 दिसम्बर, 2021 में आपको उत्कृष्ट कृषक सम्मान से नवाजा गया। श्री अन्ना बड़े हर्ष मिश्रित शब्दों में बताते हैं कि पूर्व में जहाँ मुश्किल से ₹ 15 हजार खेती से मिलते थे, उन्नत तकनीक और परिश्रम के बल पर आज लगभग ₹ 1.40 लाख की वार्षिक आय हो रही है।

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड एक कृषि प्रधान राज्य है जहाँ लगभग 65 प्रतिशत आबादी आजीविका संवर्धन हेतु कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों पर आश्रित है। यद्यपि राज्य में केन्द्र व राज्य सरकार के कृषि विकास सम्बन्धी अनेक योजनाओं के संचालन एवं नवीनतम कृषि तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई है। परन्तु आने वाले वर्षों में जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि एवं कृषि योग्य खेती का रकबा लगातार कम होने के कारण पर्याप्त खाद्यान्न आपूर्ति सुनिश्चित करना एक चुनौती है। इस परिप्रेक्ष्य में क्षेत्र विशेष के सापेक्ष खेती का सही आकलन कर इसमें उचित नियोजन करने की आवश्यकता है। ताकि उन्नत कृषि तकनीकी एवं गुणवत्तापूर्ण निवेशों को किसानों के द्वार तक ससमय पहुँचाकर कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सके। इसी के दृष्टिगत राज्य के विभिन्न जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न जनपदों के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के कृषकों तक कृषि की नवीनतम तकनीकों को पहुँचाने हेतु कृषि प्रसार के विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। इसके साथ ही रेखीय विभागों द्वारा केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों की जानकारी दी जा रही है। मैं कृषकों से भी अपील करूँगा कि वे अपने क्षेत्र की आवश्यकतानुरूप उन्नत तकनीक अपना कर स्वरोजगार सृजन करें। तकनीकी सहायता हेतु विश्वविद्यालय सद्वैव तत्पर रहेगा। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" में वैज्ञानिकों द्वारा संचालित प्रसार गतिविधियों के साथ-साथ कृषकोपयोगी तकनीकों, सफलता की कहानियों एवं आगामी त्रैमास के सम-सामयिक कृषि कार्यों का भी समावेश किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि प्रसार से जुड़े कर्मियों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी। इस पत्रिका के सम्पादन हेतु मैं डा. बी.डी. सिंह प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) को बधाई देता हूँ।



(डा. जितेन्द्र क्वात्रा)

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी-उत्तराखण्ड

आभार

वर्तमान में हमारे देश की जनसंख्या 140 करोड़ पार कर चुकी है तथापि नीति नियंताओं, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से आज हमारे पास इतनी बड़ी जनसंख्या हेतु पर्याप्त भोजन उपलब्ध है। उत्तराखण्ड की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण कृषि में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पायी है। इस चुनौती को मद्देनजर रखते हुए पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के अधीन कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक, कृषकों के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने एवं उनके आर्थिक उन्नयन हेतु निरन्तर प्रयासरत हैं। कृषकों तक तकनीकी के हस्तान्तरण में कृषि पत्रिकाओं का भी अहम भूमिका है। पंतनगर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" वर्ष 2024 का चतुर्थ अंक आपके हाथों में है, जिसके माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं मुख्यालय द्वारा अक्टूबर से दिसम्बर, 2024 की अवधि में संचालित विभिन्न प्रसार गतिविधियों के साथ-साथ आगामी त्रैमास में किये जाने वाले कृषि कार्यों की जानकारी भी समाहित की गयी है। मुझे विश्वास है कि यह कृषक समुदाय एवं कृषि प्रसार से जुड़े कर्मियों हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। मैं निदेशक प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों/वैज्ञानिकों एवं मुख्यालय के सभी वैज्ञानिकों/कर्मियों का आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से इस पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन संभव हो पा रहा है। पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझावों के आकांक्षी हैं। आप अपने सुझाव अधोलिखित पते, फोन नम्बर अथवा मेल-आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।



धन्यवाद।

(बी.डी. सिंह)

प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) व सम्पादक

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई-मेल : dirextedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944-234810, 235580, किसान कॉल सेन्टर: 1800-180-1551
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)